श्री सन्तोषीमाता का प्राचीन मन्दिर

सावित्री मन्दिर मार्ग, ब्रह्मा मन्दिर के पीछे,
बड़ी बस्ती, पुष्कर (अजमेर-राज.)

जय सन्तोषी चालिसा

(1 से 9)

(9 फिर 1 से 8)

संकट मोचन बड़ गणेश

सिद्धि मंत्र

ॐ श्री गणेशाय नमः अविघ्नमस्तु

ॐ श्री गणेशाय नमः

ॐ श्री लक्ष्मी आय नमः

ॐ जय श्री रिद्धि सिद्धि आय नमः

ॐ जय श्री लाभ शुभ आय नमः

(यह पांच पंक्तियों का एक पूर्ण मंत्र है।)

विघ्न हरण मंगल करण, पूरब पश्चिम ले प्रकाश।

नाम ले श्रीगणेश का सब काम निकास॥

स्व. प.
श्री रामाकिशनजी (नागौरी)

श्रीमती राईबाई नागौरी

धाम परिचय

प्राचीन काल मे पुष्कर निवासी स्व. प. 3 श्री रामाकियानजी पाराशर (नागौरी) इस स्थान पर साविी मन्दिर में जाने वाले दर्शनार्थियो के लिये एक चबुतरा बनाकर पेय–जल की व्यवस्था अपने स्वयं के कध ों पर कावड़ द्वारा लाकर किया करते थे। धीरे–धीरे पं. जी के प्रयास से पक्की प्याऊ का निर्माण करवाया गया। सन् 2012 में प्याऊपर नल योजना चालू हुई। प. जी की मृत्यु के पश्चात् उनकी धर्मपत्नि ने इस सेवा भाव को चालू रखा। उन्होने यही पास ही सन्तोषी माता के मन्दिर का निर्माण करवाया। जो इस पुष्कर तीर्थ मे अपना एक विशेष महत्व रखता है। इस मन्दिर के परिसर मे ही एक विशाल प्राचीन वट वृक्ष की जड़ मे प्राकृतिक रूप से प्रकट सिद्ध संकट मोचन बड़ गणेश का मन्दिर है। मन्दिर के पास ही रामशिला नाम का पत्थर है जो पानी में तैरता है।

ऐसी मान्यता है कि लगातार सात बुधवार इस पवित्र धाम मे आकर भगवान की सूखा नारियल, कपड़ा, लच्छा, लोग, पान आदि से सेवा पूजा करने पर वांछित मनोकामना पूर्ण होती है।

सम्पादक

जय सन्तोषी चालिसा

हाथ जोड़ विनती करुं–चरणों में हे मात।
लज्जा मेरी राखियो – तुम सन्तोषी मात।।
सब देवो की आस तज – आया तेरे द्वार।
कृपा दृष्टि करके – मां भक्ति देवो अपार।।

मां सन्तोषी की जै बोलो, अपने दिल का ताला खोलो।
छोड़ काम सब दर्शन पाओं, माताजी से वर भी पाओ।।
खुश हो माता दर्शन देओ, भक्तों को ना तरसाओ।
तन की पीड़ा दूर भगाओ, मन को मेरे शुद्ध बनाओ।।
मां तेरी शोभा है न्यारी, हाथ त्रिशूल सोहे है भारी।
शीश मुकुट सोने का सोहे, देख देख सबका मन मोहे।।
गले में मुक्ता माला विराजे, कानन कुण्डल सुन्दर साजे।
भाल में बिंदिया की छवि न्यारी, न्योछावर होवे नर नारी।।
चार भुजा फलदायीमाता, नेह रतन ज्योति है माता।
मन्दिर मा के नौबत बाजै, सुन सुनकर सब देव भी नाचे।।
श्रृद्धा से तुमको शीश नवावे, वो मैया से सब कुछ पावे।
जो भी बैरी, भक्त को सतावे, मां संतोषी मार भगावे।।
सच्चे दिल से जो कोई ध्यावे, उसकी नैया पार लगावे।
भक्तों की मां है प्रतिपाली, उनकी सदा करे रखवाली।।

मां संतोषी की शोभा न्यारी, शील संतोष की देनेवारी।
तेरी आस पै बैठे मैया, मेरी पार लगाओ नैया।।
निज चरणों का दास बनाओ, मुझको अपना दर्श दिखाओ।
मैं हूँ तेरा बालक माता, तुम हो मेरी पालक माता।।
तम्हें छोड़ कहां मैं जाऊं, किसको अपना हाल सुनाऊं।
तेरे सिवा ना दूजा कोई, करुणा करे भक्त पर जोई।।
कारज हमारे जब रुक जावे, मां संताषी पार लगावे।
तुम हो संकट मेटन हारी, मन वांछित फल देने वाली।।
तेरी शरण में जो कोई आवे, वो मैया से सब कुछ पावे।
संकट में जो याद करत है, उसके संकट आप हरत है।।
ऐसा कोई मिले न दाता, दीनों पर जो दया दिखाता।
भाव भक्ति की भूखी माता, पान पुष्प से राजी माता।।
जो भी तुमको निशदिन ध्यावे, कभी न मैया वो दु:ख पावे।
गुड़ और चने का भोग लगावे, और मिठाई तुझे न भावे।।
शुक्रवार है शुभ दिन प्यारा, ध्यावे तुमको सब दिन सारा।
जो कोई मां की ज्योति जलावे, उसको परम् ज्योति मिल जावे।।
अन्तकाल तुमको ध्यावे, सीधा तेरे धाम को आवे।
राधेश्याम पाराशर नागौरी है ध्याता, चरणों में चित रखना माता।।
इतनी कृपा करो ऐ माता, तुमको कभी न भूलूं माता।
तू राई को पर्वत कर देती, सभी काम सिद्ध हो जाता।।

राई को सपने ध्यान दिलाया, अपना एक मन्दिर बनवाया।
पुष्कर तीर्थ पर्वत के नीचे, बरगद तले विराजे माता।।
अपना सेवक जानकर दया करो हे मात।
निज सेवा में बुलायकर गुनाह करो सब माफ।।

फिल्मी आरती

मैं तो आरती उतारुं रे, संतोषी माता की।
जय–जय सन्तोषी माता, जय जय मां, जय जय मां।
बड़ी ममता है बड़ा प्यार मां की आंखों में।
बड़ी करूणा माया दुलार, मां की आंखों में।
क्यूं न देखूं मैं बारम्बार मां की आंखों में।
दिखे हर घड़ी नया चमत्कार मां की आंखों में।
नुत्य करुं झूम–झूम – झम झमा झम–झूम झूम।
झांकी निहारुं रे, ओ प्यारी प्यारी झांकी निहारुं रे।
मैं तो आरती उतारु रे सन्तोषी माता की।
जय जय सन्तोषी माता, जय जय सन्तोषी माता।
सदा होती है जय जयकार, मां के मन्दिर में।
नित झांझर की हो झनकार, मां के मन्दिर में।
सदा मंजिरे करते पुकार, मां के मन्दिर में।
वरदानों का भरा है भण्डार, मां की आंखों में।

।। भजन ।।

माता संतोषी की चर्चा हर जुबान पर।
सबको मालुम है, सबको खबर हो गई ।।

बड़गणेश की प्यारी बेटी, स्वर्गलोक सूं आई हेटी।
सब भक्तो की विपदा मेटी, ममाता सन्तोषी की ....
सन्तोषी है नाम तुम्हारा, तुमको जाने ये जग सारा।
शुक्रवार प्यारा दिन थारा, ममाता सन्तोषी की.....
गुड़ और चना जो भोग लगावे,-माता से मन वांछित पावे।
मां भक्ति की भूखी माता, निश दिन जो तुमको है ध्याता।
फिर कभी वो दुःख न पाता, राधेश्याम है दास कहाता।

–: मां से पुकार :–

हे मां सन्तोषी! तू ही ब्रह्माण्ड को बनाने वाली जगत जननी परम् परमेश्वरी प्यारी ममतामयी मा हो। तुम्हारी शक्ति एक परम् ज्योति है जिसके अन्दर मैं ब्रह्म, विष्णु और महेश के दर्शन करता हूं। ऐसी मेरी मां के चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम मालूम हो। हे मां! मुझे शक्ति, भक्ति और ज्ञान दो जिससे मैं सदमार्ग पर चलकर ससार रूपी नाव में बैठकर पार उतर जाऊं।

।।जय सन्तोषी मां ।।

–: विनती :–

मात भव भावना भर दे, काम क्रोध मद लोभ ईर्ष्या द्वेष हृदय से हर दे।
चित चंचल चहु ओर फिरत है, चरण कमल में कर दे ।।
मुख से निकले मधुर वचन, मां ऐसा सुन्दर स्वर दे ।।
नित्य प्रति तेरी दया दृष्टि हो, ऐसी करुणा कर दे ।।
मात भव भावना भर दे ।। – राधेश्याम पुजारी

संकटनाशनगणेशस्तोत्रम्

नारद उवाच

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपूत्रं विनायकम्।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायु: कामार्थसिद्धये॥ १॥
प्रथम् वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम्।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्ष गजवक्त्र चतुर्थकम्॥ २॥
लम्बोदर पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।
सप्तमं विघ्नराजं च धूम्रवर्ण तथाष्टमम्॥ ३॥
नवमं भालचन्द्रं च दशम तु विनायकम्।
एकादशं गणपतिं द्वादश तु गजाननम्॥ ४॥
द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं य: पठेन्नर:।
न च विघ्नमयं तस्य सर्वसिद्धिकर प्रभो॥ ५॥
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्॥ ६॥
जपेग्दणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासै: फल लभेत्।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशय:॥ ७॥
अष्टभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा य: समर्पयेत्।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादत:॥ ८॥
इति श्रीनारदपुराणे सङ्कटनाशनगणेशस्तोत्र सम्पूर्णम्।

नारदजी बोले- पार्वती नन्दन देवादेव श्री गणेशजी को सिर झुकाकर प्रणाम् करें और फिर अपनी आयु, कामना और अर्थ की सिद्धि के लिये उन भक्त निवास का नित्य प्रति समरण करें। १. पहला वक्र

तुण्ड(टेढ़े मुख वाले) दूसरा एक दन्त (एक दांत वाले) तीसरा कृष्ण पिगाक्ष (काली और भूरी आंखों वाले) चौथा गजबका (हाथी के मुखवाले) २. पांचवां लम्बोदर (बडे पेट वाले) छठा विकट (विकराल) सांतवां विघ्नराजेन्द्र (विघ्नों का शासन करने वाले राजाधिराज) आठवां घुम्रवर्ण (धूसर वर्ण वाले) ३. नवां भालचन्द्र (जिसके ललाट पर चन्द्रमा सुशोभित है)दसवां विनायक, ग्यारहवां गणपति और बारहवां गजानन ४. इन बारह नामों का जो पुरूष (प्रात:, मध्यान्ह और सांयकाल) तीनों सन्ध्याओं में पाठ करता है, हे प्रभु उसे किसी भी प्रकार के विघ्न का भय नहीं रहता। इस प्रकार का स्मरण सब प्रकार की सिद्धियां देने वाला है। ५. इससे विद्यभिलाषी विद्या, धनाभिलाषी धन, पुत्रेच्छु पुत्र तथा मुमुक्षु मोक्षगति प्राप्त कर लेता है। ६. इस गणपति स्त्रोत का जप करे तो छ: मास में इच्छित फल प्राप्त हो जाता है तथा एक वर्ष में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है। ७. जो पुरूष इसे लिखकर आठ ब्रह्मणों को समर्पण करता है गणेशजी की कृपा से उसे सब प्रकार की विद्या प्राप्त हो जाती है। ८.

सङ्कट नाशन गणेश स्त्रोत+म्

॥ श्री गणेश चालीसा ॥

जय गणपति सद्गुणसदन, कविवर बदन कृपालु।
विघ्न हरण मंगल करण, जय जय गिरजा लाल॥

जय जय जय गणपति गणराज। मंगल भरण करण शुभ काजू॥
जय गज बदन सदन सुखदाता। विश्व विनायक बुद्धि विधाता॥

वक्र तुण्ड शुचि शुण्ड सुहावन। तिलक त्रिपुण्ड भाल मन भावन ॥
राजित मणि मुक्तन उर माला। स्वर्ण मुकुट शिर नयन विशाला ॥
पुस्तक पाणि कुठार त्रिशूल। मोदक भोग सुगन्धित फूल ॥
सुन्दर पिताम्बर तन साजित। चरण पादुका मुनि मन राजित ॥
धनि शिव सुवन षडानन भ्राता। गोरी ललन विश्व विख्याता ॥
ऋद्धि सिद्धि तव चँवर सुधारे। मूषक वाहन सोहत द्वारे ॥
कहौ जन्म शुभ कथा तुम्हारी। अति शुचि पावन मंगल कारी ॥
एक समय गिरी राज कुमारी। पुत्र हेतु तप किन्हो भारी ॥
भयो यज्ञ जब पूर्ण अनूपा। तब पहुँच्यो तुम धरि द्विज रूपा ॥
अतिथि जानि के गौरी सुखारी। बहु विधि सेवा करी तुम्हारी ॥
अति प्रसन्न है तुम वर दीना। मातु पुत्र हित जो तप किना ॥
मिलहि पुत्र तुहि बुद्धि विशाला। बिना गर्भ धारण यहि काला ॥
गणनायक गुण, ज्ञान निधाना। पुजित प्रथम् रूप भगवाना ॥
अस कहि अन्तर्ध्यान रूप है। पलना पर बालक स्वरूप है ॥
बनि शिशु, रूदन जबहि तुम ठानी। लखि मुख सुख नहिं गौरी समानी ॥
सकल भगन सुख मंगल गावहिं ॥ नभ ने सुमन सुमन वर्षावहिं ॥
शम्भु, उमा, बहुदान लुटावहिं। सुर मुनि जन सुत देखन आवहिं ॥
लखि अति आनन्द मंगल साजा। देखन भी आये शनि राजा ॥
निज अवगुण गुनि शनि मन माहिं। बालक, देखन चाहत नाहिं ॥
गिरजा कछु मन भेद बढ़यो। उत्सव मोर, न शनि तुहि भायो ॥
कहन लगे शनि, मन सकुचाई। का करिहो शिशु माहि दिखाई ॥

नहीं विश्वास उमा कर भयऊ। शनि सों बालक देखन कहयऊ॥
पड़तहिं, शनि दृग कोण प्रकाशा। बालक शिर उड़ि गयो आकाशा॥
गिरिजा गिरी विकल है धरणी। सो दुख दशा गयो नहिं वरणी॥
हाहाकार मच्यौ कैलाशा। शनि किन्हयों लखि सुत का नाशा॥
तुरत गरूड़ चढ़ि विष्णु सिधाये। काटि चक्र सों गज शिर लाये॥
बालक के धड़, ऊपर धारयो। प्राण, मन्त्र पढ़ शंकर डारयो॥
नाम गणेश शम्भु तब कीना। प्रथम पूज्य बुद्धि निधि वर दीना॥
बुद्धि परीक्षा जब शिव कीना। पृथ्वी कर प्रदक्षिणा लीना॥
चले षडानन भर म भुलाई। रचे बैठे तुम बुद्धि उपाई॥
चरण मातु पितु के धर लीन्हें। तिनके सात प्रदक्षिण कीन्हें॥
धन्य गणेश कहि शिव हिय हरषै। नभ ते सुरन सुमन बहु बरसे॥
तुम्हारी महिमा बुद्धि बड़ाई। शेष सहस मुख सके न माई॥
मैं मति हीन मलिन दुखारी। करहु कौन विधि विनय तुम्हारी॥
भजन राम सुन्दर प्रभुदासा। लग प्रयाग, ककरा दुर्वासा॥
अब प्रभु दया दीन पर कीजै। अपनी शक्ति भक्ति कुछ दीजै॥

दोहा

श्री गणेश यह चालिसा, पाठ करें धर ध्यान।
नित नव मंगल गृह बसे, लहे जगत सन्मान॥
सम्वन्ध अपने सहस्त्र दश, ऋषि पंचमी दिनेश।
पूरण चालिसा भयो, मंगल मूर्ति गणेश॥

गणेशजी का मन्त्र

१ महा करर्पाये विदेयहे, वक्र तुण्डाय धी महि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्:

(यह गणेश गायत्री है)   ॐ शं गौ गणपताये विघ्न विनाशिने स्वाहा

मानसिक पूजा

जब आप यात्रा पर या अपने रिश्तेदार के यहां जाय और आपको पूजा का सामान उपलब्ध न हो तो आप मानसिक पूजा कर सकते हैं। पूजा के मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं।

१. **ॐ लं पुथित्यांत्मकं गन्धं परिकल्पयामि**
प्रभौ! मैं पृथ्वी रूप गन्ध (चन्दन) आपको अर्पित करता हूं

२. **ॐ ह्वै आकाशत्मकं पुष्पं परिकल्पयामि**
प्रभो! मैं आकाश रूप पुष्प आपको अर्पित करता हूँ

३. **ॐ यं वात्यनात्मकं धूप परिकल्पयामि**
प्रभो! मैं वासुदेव के रूप में धूप आपको प्रदान करता हूँ

४. **ॐ रं वहत्यानात्मकं दीपं दर्शयामि**
प्रभो! मैं अग्निदेव के दीपक आपको प्रदान करता हूँ

५. **ॐ व अमृतात्मकं नैवेधं निवेदयामि**
प्रभो! मैं अमृत के समान नेवध आपको निवेदन करता हूँ

६. **ॐ सौ सर्वात्मकं सर्वोपचार समर्पयामि**
प्रभो! मैं सर्वत्मा के रूप में संसार के सभी उपचारों को आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

इन मन्त्रों से भावना पूर्वक मानस पूजा की जा सकती है।

श्री विष्णोरष्टाविंशतिनाम स्त्रोतम्

किं नु नाम सहस्त्राणि जपते च पुनः पुनः।
यानि नामानि दिव्यानि तानि चाचक्ष्व केशव॥ १॥
मत्स्यं कूर्मं वारहं च वामनं च जनार्दनम्।
गोविन्दं पुण्डरीकाक्षं माधवं मधुसूदनम्॥ २॥
पद्मनामं सहस्त्राक्षं वनमालिं हलायुधम्।
गोवर्धनं हृषीकेशं वैकुण्ठं पुरूषोत्तमम्॥ ३॥
विश्वरूपं वासुदेवं रामं नारायणं हरिम्।
दामोदरं श्रीधरं च वेदांग गरूड़ध्वजम्॥ ४॥
अनन्तं कृष्णगोपालं जपतो नास्ति पातकम्।
गवां कोटिप्रदानस्य अश्वमेघशतस्य च॥ ५॥
कन्यादान सहस्त्राणां फलं प्राप्नोति मानवः।
अमायां वा पौर्णमास्यामे का दश्यां तथैव च॥ ६॥
सन्ध्या काले स्मरेन्नित्यं प्रातः काले तथैव च।
मध्याह्ने च जपन्नित्यं सर्व पापैः प्रमुच्यते॥ ७॥

अर्जुन ने पूछा- केशव मनुष्य बार-बार एक हजार नामों का जप क्यों करता है? आपके जो दिव्य नाम हों, उनका वर्णन कीजिये।
श्री भगवान बोले- अर्जुन मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, जनार्दन, गोविन्द, १४
पुण्डरीकाक्ष, माघव, मधुसूदन, पद्मनाम, सहस्त्राक्ष, वनमाली, हलायुध, गोवर्धन, हृषीकेश, वैकुण्ठ, पुरूषोत्तम, विश्वरूप वासुदेव, राम नारायण, हरि, दामोदर, श्रीधर, वेदाङ्ग, गरूड़ध्वज, अनन्त और कृष्ण गोपाल-

इन नामों का जप करने वाले मनुष्य के भीतर पाप नहीं रहता। वह एक करोड़ गोदान, एक सो अश्वमेघ यज्ञ और एक हजार कन्यादान का फल प्राप्त करता है। अमावस्या, पूर्णिमा तथा एकादशी तिथि को और प्रतिदिन सांय, प्रात: एवं मध्याह्न के समय इन नामों का समरण पूर्वक जप करने वाला पुरूष सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है।

प्रात: जागणी

१. कारागे बसते लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती
करमूले स्थित ब्रह्मो प्रभाते कर दर्शम्

हथेलियों के अग्रभाग में लक्ष्मी निवास करती हैं अत: प्रात: हथेलियों का दर्शन करना आवश्यक है इससे पुण्य लाभ होता है।

२. ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

इस मन्त्र को हरदम जपने से धनधान की वृद्धि होती है साथ ही दरिद्रता मिटती है।

३. ॐ नमो नारायणाय

४. ॐ हरये नम:

इस मन्त्र का उच्चारण करते हुये प्राणों का त्याग करता है वह परम पवित्र पुरूष जीते जी ही मुक्तक है इस प्रकार नारायण मन्त्र के प्रभाव से पाप रहित हुआ मनुष्य का भी उद्धार हो जाता है।

५. संगात, सेहाद, भयाल्लो यादक्षाना द्रपियो नर:
विष्णो रूपासनं कुर्यात् सीऽक्षयं सुख मश्नुते
अकाल मृत्युशमन सर्वव्याधि विनाशनम्
सर्वदु: रवि पशमनं हरिपादोदकं समृतम्

जो मनुष्य किसी के संग से, सन्हे से, भय से, लोभ से अथवा

अज्ञान से भी भगवान विष्णु की उपासना करता है, वह अक्षय सुख का भागी होता है। भगवान विष्णु का चरणादिक अकाल मृत्यु का निवारक, समस्त रोगों का नाशक और सम्पूर्ण दु:खों की शांति करने वाला माना गया है।

सरस्वती मन्त्र कल्याणकारी

यथा बु देवी भगवान् ब्रह्मालोक पितामहः।
त्वांपरित्यिन्य नो विषेत् तथा भव वर पदा॥
वेदशास्त्राणि सर्वाणि नृत्यगीतादिंक च यत्।
वाहिंतं यत् त्वया देवि तथा मे सन्तु सिद्धुयः॥
लक्ष्मी मेघा वरारिष्टि गोरी वृष्टि प्रभामतिः।
एतामिः पाहि तनुभिरास्वा भिची: सरस्वति॥

जो पुरूष सारस्वत वृत करता है वह विद्वान, धनवान और मधुर कण्ठ वाला होता है भगवती सरस्वती की कृपा से वह वेदव्यास के समान कवि हो जाता है नारी भी यदि इस वृत का पालन करे तो उसे भी पूर्वोतक फल प्राप्त होता है।

१. ॐ ऐ हों श्री सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा

इस मन्त्र तथा सरस्वती कवच के प्रयोग से मनुष्य शिक्षा के क्षेत्र में परम् सफल विद्वान, कवि, सम्राट तथा विश्व विजयी होता है।

२. ॐ श्री हीं कलीं ऐं कमलवासि न्यै स्वाहा

इस मन्त्र तथा महालक्ष्मी स्त्रोत के प्रयोग से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ती होती है।

३. ॐ श्री नमः श्री कृष्णाय परिपूर्णाविनाय स्वाहा

इस मंत्र एवं नौलोक्य विजय कवच के प्रयोग से शत्रु नाश, विजय और राज्य की प्राप्ति होती है।

॥ आरती ॥

जय-गणेश, जय-गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।
लड्डूवन का भोग लगे सन्त करे सेवा॥ जय...॥
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी॥ जय...॥
अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया॥ जय...॥
हार चढ़े फूल चढ़े और चढ़े मेवा।
सूरदास शरण आयो सुफल कीजै सेवा॥ जय...॥
दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारि।
कामना को पूरण करो जग बलिहारी॥ जय...॥
विघ्न हरण मंगल करण पूरब पश्चिम ले प्रकाश।
नाम ले श्री गणेश का सब काम निकास॥
॥ संकट मोचन बड़ गणेशजी महाराज की जय॥

॥ सिद्धी मन्त्र॥

ॐ श्री गणेशाय नमः अविघ्नमस्तु
ॐ श्री गणेशाय नमः
ॐ श्री लक्ष्मी आय नमः
ॐ जय श्री रिद्धि सिद्धि आय नमः
ॐ जय श्री लाभ शुभ आय नमः

॥ नियम ॥

१. पूजा अर्चना मनौती के लिये-

केवल पांच सेर या सवा चार सेर लड्डू (बेसन का मगज लड्डू) सात बुधवार तक लगातार चांद के बुध (शुक्ल पक्ष) के बुधवार से शुभारम्भ (अर्थात् हर बुद्ध ७५० ग्राम बेसन के लड्डू, माला धूप, शुक्ल पक्ष बुधवार से आरम्भ कर सात बुधवार नियमपूर्वक चढ़ाना आवश्यक है)

२. बेसन के लड्डू, चूरमे का प्रसाद व अन्य भोग पर्दे की आड में लगाना या पुजारी से लगवाना आवश्यक।

३. परिक्रमा-

तीन परिक्रमा आवश्यक (सात बुधवार को हर बुधवार) एक बार में लगातार १०८ परिक्रमा कभी नहीं करें पूजन-ध्यान-हवन आदि पूर्ण होने पर केवल ३ परिक्रमा आवश्यक रूप से की जाये।

४. मनौती पूर्ण होने पर-

सात सेर या सवा सेर चूरमा लड्डू एक बुधवार चांद के बुध (शुक्ल पक्ष) के बुधवार को या गणेशचतुर्थी के दिन

५. श्री भोमियाजी देव-

कार्य या पूजन आदि के पूर्ण होने पर लौंग बताशे का भोग, माला, अगरबत्ती आदि चढ़ाना आवश्यक है।

६. सावधानी-

मन्दिर के अन्दर बांस से बनी अगरबत्ती का उपयोग नहीं करें। चमड़े का बैल्ट, पर्स, बैग आदि नहीं लावें, निषिद्ध है।

७. भण्डारा-

कोई भी मानव या भक्त आदि भण्डारा कर सकते हैं। भण्डारे में दाल, बाटी, चूरमा, गट्टे, पालक-आलू-ककड़ी आदि की पकौड़ी, निमंत्रितों व आमंत्रितों को श्रद्धापूर्वक भोजन कराया जाय तथा गरीब, बेसहारा की भोजन वयवस्था अवश्य की जाये।

नोट:- सेवक के अलावा अन्य सभी पुजारी द्वारा ही भोग लगवायें (पर्दे की आड़ देकर)

॥ इति ॥

भेटकर्ता एव प्राप्ति स्थान :- **पवनकुमार खेमका**
379, दखिणधारी रोड़, लाहा बागान, श्री भूमि, लेक टाउन, कोलकाता-700048 ☎ 033-32557009, 033-25217293

प्रकाशक :- **राई बाई** पत्नि स्व. श्री रामाकिशनजी पण्डित
श्री सन्तोषी माता का प्राचीन मन्दिर, ब्रह्मा मन्दिर के पीछे, सावित्री मन्दिर का रास्ता, पुष्कर (राज.)

मुद्रक एवं शब्द सज्जा : **अग्रवाल कम्प्यूटर एवं प्रिन्टर्स,**
8/243, वकील साहब का मकान, माली मौहल्ला, पट्टी कटला, अजमेर

|| आरती ||

ॐ जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता।
भक्तों की हितकारी, सुख सम्पत्ति दाता।। ॐ।।
शीश मुकुट सोने का, गले मुक्त माला।
कानन कुण्डल राजे, कमला कृति वाला।। ॐ।।
भाल बिन्दिया राजे, नासा गज मोती।
चार भुजा सुख दायी, नेह रतन ज्योति।। ॐ।।
भाव भक्ति की भूखी, मन वांछित दाता।
जो कोई तुमको ध्यावे, कभी न दुःख पाता।। ॐ।।
गुड़ और चना तुम्हें है, मोदक से प्यारा।
शुक्रवार शुभ दिन है, सारा जग ध्याता।। ॐ।।
शील संतोष की दाता, खड़ग् खप्पर धारी।
भक्त तेरे चरणों में जावे बलिहारी।। ॐ।।
जो कोई मां की आरती, चित मन से गावे।
लख चौरासी छूटे, भय से तिर जावे।। ॐ।।
ॐ जय सन्तोषी माता, मैया जय सन्तोषी माता।
भक्तों की हितकारी, सुख सम्पत्ति दाता।। ॐ।।

दर्शन श्री संकट मोचन बड़गणेश

सावित्री मन्दिर मार्ग, ब्रह्मा मन्दिर के पीछे,
बड़ी बस्ती, पुष्कर (अजमेर-राज.)
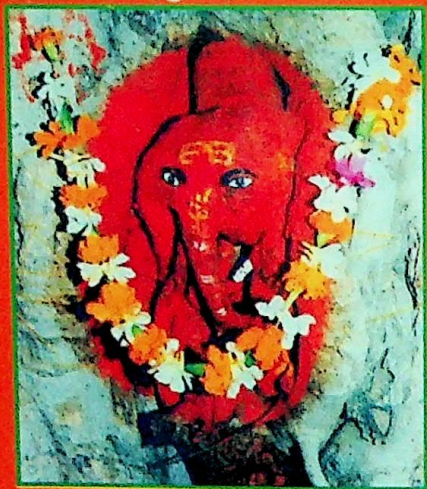
आपकी कामना की पूर्ति हेतु आप भी श्री गणेश चालिसा
एवं श्री सन्तोषी चालिसा छपवाकर भेंट कर सकते हैं।

Printed by : AGRAWAL COMPUTER & PRINTERS, Ajmer